७३. सर्वशुभ, मानव परम्परा में कैसे बने

आज दिनांक **०१ मार्च २०१३ दिन शुकवार**

एक वाक्य में सह-अस्तित्व विधि से सह-अस्तित्व ही अस्तित्व के रूप में पहचान में आ गयी है | यह घटना साधना, समाधान समृद्धि के रूप में प्राप्त हुई | इसको पाने के लिये स्वाभाविक रूप में किसी न किसी को प्रयत्न करना ही था | इसी क्रम में इसको पाया गया | पाने के क्रम में साधना, ध्यान, समाधि, संयम विधि से प्राप्त हुई जो आदर्शवाद का प्रेरणा रहा | अर्थात साधना, ध्यान, समाधि, संयम क्रियाओं का प्रेरणा आदर्शवाद का रहा है | इसी क्रम में इसे पाकर विकल्पात्मक दर्शन, विचार, शास्त्र को प्रस्तुत किया है | इन आधारों पर संविधान को प्रस्तुत किया है | मानवीय आचार संहिता रुपी संविधान को प्रस्तुत किया | इन सब को पाने के लिये, प्रकट करने के लिये समय तो लगता ही है | समय के बारे में बहुत विचार नहीं किया, कार्य की सफलता की आवश्यकता पर ज्यादा ध्यान दिया | यह पाया गया कि आदर्शवाद के समय से ही मार-काट, युद्ध को अपनाते रहें हैं; उसको अपराध नहीं माना | युद्ध में मरने वालों को स्वर्ग मिलने का आश्वासन दिया है | इस क्रम में मनुष्य में विचार होता ही रहा | युद्ध कहाँ तक न्याय है, इसका झलक आदर्शवाद में आ चुका है | आदर्शवाद में ही एक तरफ " शठे शाठ्यम प्राकुर्यात" कहकर शठ धर्मियों को शठता से ही ठीक किया जा सकता है, निर्णय लिया | दूसरा भाषा में तरह "टिट फ़ॉर टैट" | इसी प्रकार हर भाषा में प्रयोग किया गया | अंततोगत्वा मार-काट,युद्ध ही हाथ लगा, जो मानव कुल के लिये उपयोगी नहीं रहा | अभी अत्याधुनिक युग में इसे पहचानने के लिये दो संस्थाएं तैयार हुआ है | १- ग्लोबल हारमनी के नाम से रशियारशिया में तैयार हुआ है | २-ग्लोबल सिटिजन के नाम से, यह अमेरिका में तैयार हुआ है | इन दोनों संस्था के पास अभी तक यह हस्तगत नहीं हुआ कि कैसे होगा | इसमें यह माना जाता है, जो विकल्प को समझे हैं वे सब, विकल्प से ही इसका आपूर्ति होगा | विकल्प को समझा हुआ व्यक्ति धरती पर तैयार हो गये हैं |

पहला व्यक्ति तो है ही प्रमाण रूप में, इसके बाद समझा हुआ व्यक्ति तैयार हो गये हैं | इन सब का मानना ऐसा ही है | ये सब अँगुलियों में गिनने योग्य हैं, अभी बहुत सारे लोग नहीं हैं | यह प्रचलित होने के लिये कार्यक्रम शुरू किये हैं | विकल्प अध्ययन रूप में काफी लोग अपना भागीदारी पूरा कर रहे हैं | इसको देखने पर ऐसा लगता है कि कुछ समय पर ही धरती पर विकल्प की आवश्यकता का अनुभव होगा | आगे लिखने वाले जितने भी लेख हैं ये सब का सब विकल्प के आधार पर ही हैं | अत्याधुनिक शिक्षा के बाद भी विकल्प की आवश्यकता रही है, ये आश्चर्य की बात है | अत्याधुनिक शिक्षा सर्वोपरी सौभाग्यशाली होगा ऐसी कल्पना रही है, परिणाम में ऐसा नहीं हुआ | परिणाम स्वरूप में सभी अपराधों को वैध मान लिया | आदर्शवाद कालीन युग में संघर्ष, युद्ध को अपनाया | अत्याधुनिक विधि से व्यापार विधि से सुविधा, संग्रह को माना,जिसकी आवश्यकता रही ही है | संग्रह,सुविधा के साथ इन तीनों को अर्थात लाभोन्मादी अर्थशास्त्र ,भोगोन्मादी समाजशास्त्र , कामोन्मादी मनोविज्ञान इन तीनों भागों को अत्याधुनिक युग अति संतुष्टि से गाते आया है | संतुष्टि जनमानस को नहीं मिला | इसका गवाही में मिल रहा है | अभी ये दोनों संस्था अलग से तैयार हुई हैं | दोनों संस्थाएं विकल्प को समझने के लिये तैयार हो रहा है; क्या कर पायेंगे आगे की बात है | इस क्रम में चलते हुए अभी तक विकल्प का हसरत अध्ययन के पश्चात अपनाना शुरू होता है | सूचना से अध्ययन के प्रति ध्यानाकर्षण होता है, इसको देखा गया है | जबतक यह पूरा धरती पर मानव जाति में वैशक्त है इसी के क्रम में, संदर्भ में इन लेखों का संग्रह है |

मानव जाति ही समझने के लिये एकमात्र इकाई है, इस बात को स्पष्ट करने की कोशिश की है | यह आदर्शवाद में भी स्पष्ट नहीं हुआ, भौतिकवाद में भी स्पष्ट नहीं हुआ | मानव ज्ञानावस्था में होना प्रतिपादित है | उसी के आधार पर यह लेख प्रस्तुत है | यहाँ तक अपने पास गवाहियाँ तैयार हुआ है- मानव ही अध्ययन करता है, मानव ही सोचता है, मानव ही समझता है, मानव ही प्रमाण का आधार है | मानव ही प्रमाण को प्रस्तुत करता है |

धरती पर मानव जात ही विकल्प को तैयार किया है | इसके पहले अत्याधुनिकवाद अथवा विज्ञानवाद को प्रस्तुत किया; उसके पहले जंगल युग, पाषाण युग, धातु युग के रूप में इतिहास में बताया है | कबीला, ग्राम युग के बारे में विकल्प विधि से प्रस्तुत हुई | अभी मुख्य रूप में देश रूप में आदमी तैयार हो गये हैं | मानव जाति अनेक, मानव जाति के निवास के देश अनेक हो गये हैं | इसे हर व्यक्ति समझ सकता है | इस ढंग से कोई द्वेष-मुक्ति, युद्ध-मुक्ति का आधार नहीं है | युद्ध-मुक्ति, अपराध-मुक्ति, भ्रम-मुक्ति के बिना मानव जाति का कल्याण नहीं है | इसको भली प्रकार से शोध किया गया है | उक्त तीनों मुक्ति के लिये ध्यान में रखते हुए यह लेख लिखा जा रहा है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत